ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-4* Issue-11* February- 2020
Anthology : The Research

तमस उपन्यास की मानवीय त्रासदी

अलका श्रीवास्तव
डॉ. राधा बाई शास. नवीन कन्या महाविद्यालय,रायपुर (छ.ग.), भारत

सारांश

विभाजन के सौर्वभौमिक सत्य को इतिहास के सच और सांस्कृतिक अस्मिता के साथ हिन्दी लेखन मे जीवंत अभिव्यक्ति मिली है। इसमें अनुभव का कठोर सच, वैचारिकता निष्पक्षता और कलात्मक संयम, मानवीय संवेदना के सूत्र मे आबद्ध किया गया है। इतिहास, संस्कृति और साहित्य को समझनें की नवीनतम दृष्टि का अन्वेषण है। स्वतन्त्रता विभाजन के दर्द के साथ मिली। इस भयावह त्रासदी और संघर्ष का अंत संभव नही हुआ। दुख की गहरी काली रेखाओं और सिसकते हुए परिवे''ा ने 'सभ्यता और संस्कृति', 'जाति और कौम', 'राष्ट्र और राष्ट्रवादियों' संबंधी अवधारणाओं मे ऐसा परिवर्तन किया, जिसमें सभी स्तब्ध रह गये। वैचारिक पृष्ठभूमि, दृष्टिकोण, संवेदनाएं और आत्मीय संबंध इतने दूर तक प्रभावित हुए कि आज तक मुक्ति संभव नही हुई। तमस नये वृह्द आयामो को खोलकर अपनी सार्थकता की उत्कृष्टता भी प्रमाणित करती है।

''झरोखे'' और ''कड़िया'' जैंसे परस्पर विरोधी आयामी उपन्यासों के बाद ''तमस'' का आना

भीष्म साहनी के निर्बन्ध कथाकार की एक और सृजनात्मक उपलब्धि है।

''तमस'' उपन्यास के सृजन केन्द्र में भीष्म साहनी की बहुचर्चित कहानी ''अमृतसर आ गया'' (प्रकाशन 1971–72) है। साम्प्रदायिक राजनीति, क्रूरता, भय और संत्रास के साथ मानवीय संबंधो और मूल्यों के विघटन पर प्रश्न चिन्ह लगाती हुई उक्त कहानी अपने कलात्मक संयम, वैचारिक निष्पक्षता और खुले एवं व्यापक दृष्टिकोण का परिचय देती है। ''बंटवारा एक चट्टान की तरह लोगों के सिर पर टूटा था और जब तक वे साँस लेते पाते, कुछ सोच पाते, सब कुछ मूल्यवान– सदियों से अर्जित संस्कृति, भाषा, जातीयता, मानवीय संबंध–– सम्प्रदायिक आग की लपटों मे जलकर राख हो चुके थे।''1

''तमस'' उपन्यास विभाजन की मानवीय त्रासदी का प्रकाशन है। विभाजन के उस विकट दौर में साम्प्रदायिक ने सदियों से अर्जित हमारी संस्कृति, जातीयता, राष्ट्रीयता एवं मानवीय संबंधो के दृष्टिकोण मे इस तरह से परिवर्तन ला दिया की हम इससे प्रभावित हुए बिना नही रह सकतें। जिन खौफनाक साम्प्रदायिक स्थितियो से बचने के लिये विभाजन स्वीकार किया था, वे ही साम्प्रदायिक परिस्थितियाँ विभाजन कें दिनो में और अधिक भयावह हो गये। ''तमस'' विभाजन पूर्व साम्प्रदायिक दौर के पांच दिनो के अमानवीय कारनामो के न खत्म होने वाले सिलसिले का अनूठा कथा सत्य है।

आस्था की बुनियाद पर विकसित धार्मिक संप्रदायों से लेकर नफरत की बुनियाद पर टिकी राजनैतिक अवसरवादिता का प्रस्तुतिकरण–''तमस'' की कथा का सूत्रपात साम्प्रदायिक दंगे कराने की घृणित साजिश से होता है। उपन्यास के आरंभ में ही नत्थू– जातीय विद्वेष के षड्यंत्र को नही समझ पाता है और मुरादअली की बातो में आ जाता है और सूअर का इंतजाम कर देता है। अंनजाने मे साम्प्रदायिक दंगे कराने की घृणित साजिश मे शामिल हो जाता है। कथानक को विश्लेषित करने पर ज्ञात होता है इस साम्प्रदायिक युद्ध का मूल कारण अज्ञान और अंधविश्वासों पर पलने वाला धर्म है जो ऊपरी विभेदो के कारण मनुष्य को मनुष्य के खिलाफ खड़ा करता है। ऐसी धार्मिक आस्था एवं भावनात्मक मान्यताएं तभी विकसित होती है जब राजनैतिक समझ कमजोर हो जाती हैं। हिन्दूस्तान का आम आदमी (हिन्दू, मुसलमान) अपनी जिन्दगी के सुख एवं दुख को लेकर धर्म में घूमता है। उनकी आस्था आधुनिक समझ और साम्राज्यवादी राजनीतिक अंग्रेंजी शिकंजे में फंसकर किंकर्तव्यविमूढ़ हो गई।

अंग्रेंजो ने इस कमजोरी का पूरी तरह से दोहन किया एवं वेंदो और पुराणों में अपना जीवनदर्शन ढूंढते–ढूंढते हिन्दूस्तान को साम्प्रदायिकता के बारूद से पाट दिया। यह साम्प्रदायिकता हिन्दु एवं मुसलमानो के बीच में पैदा न होकर अंग्रेंजो के दिमाग की राजनीतिक साजिश थी चूँकि हिन्दूस्तान की आम जनता की समझ सियासी मामले मे शून्य होने के कारण ठोस जवाब जनता की तरफ से नही मिल पाया और यह साजिश उनकी आस्था की ओंट लेंकर बारूद की आग की तरह भड़क गई, जिसकी शुरूवात दंगो से हुई और परिणति विभाजन। इस तरह धर्म की गलत तकरीर के कारण हमारा सारा सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक ढ़ांचा नफरत की बुनियाद पर टिका हुआ– ''तमस में राजनीति और धर्म के अंतर्विरोध को स्पष्ट किया गया है। धर्म स्वतः स्फूर्त उन्माद मे फलता–फूलता है। राजनीति, सामाजिक चेतना के विकास से पैदा होती है। यह चेतना परिस्थिति और परिवेश सापेक्ष होती है, जिसकी परिणति असामाजिकता मे होती है, मानव द्रोह मे होती है। जबकि चेतना हमेशा विवके के अनुशासन से युक्त होती है। धर्म ने उन्मादियों को पैदा किया है। उसका पुराना इतिहास है, संस्कृति है, उसके अपने शास्त्र हैं। साहनी ने तमस मे राजनीति के निमित्त धर्म का पर्दाफाश किया है।''[2]

प्रमाणिकता के ऐतिहासिक संदर्भ तथा काल्पनिकता का समावेश

साम्प्रदायिकता की पृष्ठ भूमि पर आधारित उक्त उपन्यास के पात्रो के माध्यम लेखक ने मानवीय घृणा और निःशृसंता के घिनौने एवं विकृत परिणामों, साम्प्रदायिक दंगो को भड़काने के लिये जिम्मेदार व्यक्ति और परिस्थितियों का फर्दाफाश किया है। अखाड़ा संचालक मास्टर देवव्रत रणवीर जैसें नासमझ युवको मे साम्प्रदायिकता का विष बो देते है।

देवव्रत– ''इधर दीवारों के पास बैठ जाओ रणवीर और इस मुर्गी को काटो। दीक्षा से पहले तुम्हे अपनी मानसिक दृढ़ता का परिचय देना होगा।''[3] अत्यंत मानसिक यंत्रणा के बीच अपने गुरू के परीक्षा मे उत्तीर्ण होता है, दूसरे शब्दों मे अमानवीय वृत्ति का उदय होता है। इत्र फुलैल बेचने वाला बूढ़ा मुसलमान जो मासूम सा दिखने वाले इन्द्र को गली में अकेला समझकर सुरक्षित नियत स्थान में पहुचा देंने की बात करता है, परंतु इन्द्र अपनी सारी चेतना को केन्द्रित कर उसे मार डालने में सफलता हासिल कर लेता है। अमानवीय कृत्य मात्र और सहानुभूति के अधिकारिणी बनकर ही नही रह जाती अपितु सारे सम्मुख साम्प्रदायिक एवं हिंसक संगठनो का घिनौना चेहरा बेनकाब कर देती है। इस साम्प्रदियकता मे सदैव वही प्रभावित होता है जो निर्दोष है, जनरैल– जिसकी उम्र करीब पचास साल है, नेहरूजी के साथ जिसने रावी नदी के तट पर पूरे हर्षोउल्लास के साथ पूर्ण स्वराज्य का सारा नारा लगाया था। देश के प्रति अगाध प्रेम रखने वाला कांग्रेसं का निष्ठावान, समर्पित सेवक तब मारा जाता है जब नगर में दंगो के समय कहता है– ''हमारा दुश्मन अंग्रेज हैं। गांधीजी कहते है कि वही हमे लड़ाता है और हम भाई–भाई है। हमें अंग्रेज की बातों मे नही आना चाहिये।''[4] मुसलमान महिला (राजो) का चरित्र प्रस्तुतकर लेखक ने यथार्थता को भावनातमकता स्तर पर विकसित कर अपनी मानवतावादी दृष्टिकोण की छाप अध्येताओं पर छोड़ा है। दंगे के समय सिक्ख हरनामसिंह एवं उसकी पत्नि मुसलमान बाहुल्य गांव छोड़ने के लिये मजबूर हो जाते है एवं भटकते–भटकते जीवन और मृत्यु के बीच संघर्ष करते करते अंत में एक मुसलमान का द्वार खटखटाने के लिये विवश हो जाते है। स्त्री किवाड़ खोलती है, और निर्णायक क्षण में अपनी समस्त संस्कारो, विचारों, मान्यताओ के पूंजीभूत प्रभाव के आधार पर मानवता के पक्ष में निर्णय लेकर उन्हे अपने घर में पनाह दे देती है। पूरे परिवार के विरोध के बावजूद भी उनकी सुरक्षा का दायित्व पूरी जिम्मेदारी से निभाकर अंततः उन्हे अत्यंत कातर एवं दुखी मन से विदा करते हुये कहती है। ''जाओ, रब्ब राखा, देर हो रही है।''[5] इस महिला चरित्र के माध्यम से लेखक साम्प्रदायिकता की भावना से ऊपर उठकर मानवता की भावना को प्रतिष्ठित किये है।

साम्प्रदायिक दंगो से उपजी मानवीय वृत्तियों का चित्रण

(दंगो से पूर्व हिन्दू–मुस्लिम सम्प्रदाय के आपसी रिश्तों की सहजता तथा बाद में परिवर्वित अमानवीय वृत्तियों के कारण)– साम्प्रदायिकता का जहर बुरी तरह से मनुष्य की सहज मानवीय वृत्ति की जड़ पर ही कुठाराघात करता है, जिससे समाज का कोई भी वर्ग अछूता नही हैं। साम्प्रदायिकता ने इन्सान को इन्सान से अलग करके दो सम्प्रदायों में बांटकर रख दिया है, जो आपसी रिश्तों की सहजता को भूलकर दूसरे पक्ष का अस्तित्व समाप्त करने की गलत धारणा बनाए हुए है। साम्प्रदायिकता के मद में चूर वे भूल चुके है कि हम मानवता का विनाश कर रहे है मानव का नही। जातिगत द्वेष की चरम परिणति एक मुसलमान के शब्दों में– ''मुसलमान का दुश्मन हिन्दू नही है, मुसलमान का दुश्मन वह मुसलमान है जो दुम हिलाता हिन्दुओं के पीछे जाता है, उनके टुकड़ों पर पलता है।''[6] हिन्दु से भी ज्यादा नफरत उस मुसलमान से है जो हिन्दु, मुसलमान की एकता की बात कहता है।'' इन सारी मानवीय वृत्ति की विनष्टता के लिये जिम्मेदार संभवतः धार्मिक संस्थाएं एवं उनके प्रधान है। हिन्दुओं के धर्म गुण वानप्रस्थजी– ''सर्वे भवन्तु सुखिनः – की मंगल कामना करते है, परन्तु दंगे का समाचार मिलते ही सर्वे में से मुसलमान को निकालकर ''फैलाये घोर पाप यहां मुसलमीन ने।.....गौवध हुआ तो यहां खून की नदियां बह जायेगी।''[7] सूअर एवं गाय को धर्म से जोड़कर उसकी रक्षा के लिये मानव की हत्या उनका चरम लक्ष्य है।

मासूम बच्चे की हत्या के समय मानवीयता पर प्रश्न चिन्ह हैं– बच्चा जो अभी अपनी जिन्दगी के दो लम्हे भी पूरी न कर सका है, उसकी मासूम आंखों की क्षमता इतनी नही थी कि वह पहचान सके मुझे मारनें वाला कौन है और क्यों मारा है पर मारने वाला अपनी भावना इन शब्दों में व्यक्त करता है– ''जिस आदमी की औलद है वह बड़ा जालिम है, जालिम और नाफाक। मैने उस बच्चे का इसीलिये कत्ल कर दिया कि वह भी बड़ा

होकर जालिम बनता और बेगुनाह लोगो पर जुल्म ढाता। अब कहो, मैने अच्छा किया या बुरा किया ?''[8] अतः उसमे इतना आत्मविश्वास नही है कि वह उस बच्चे को नये सामाजिक परिवेश में मानवता का संदेश देकर, एक सम्य , सुसंस्कृत नागरिक बना सके।

सहसा एक सिक्ख युवक बल्देवसिंह केस खोलकर, नंगी तलवार लेकर ''खून का बदला खून से लेंगें'' चिल्लाते हुए दौड़ पड़ता है एवं एक बूढे लुहार करीम बख्श के सीने मे सिर्फ इसीलिये तलवार भोंगकर चला आता है कि उसकी मां घर में अकेली थी, अब नही बच पाऐंगा। क्या उसकी मॉ को उस बूढ़े लुहार ने मारा था? क्या उसके मरने से उसकी मां उसे वापस मिल गई? [9] साम्प्रदायिकता के नशे में वहशी मानव को इतना सोचने का वक्त ही कहां है, उसकी सारी चेंतना शक्ति मर चुकी है, वह विवेक शून्य हो चुका है, उसके मन मस्तिक, को धार्मिक भावना ने जकड़कर रख दिया है एवं उसकी समस्त मानवीय वृत्तियां धर्म के नाम पर कुर्बान कर दी गई है।

दंगो से प्रभावित–वर्गो के अंतविरोध

1. निम्न वर्ग की मनः स्थितियां (असुरक्षा एवं विनाश)
2. उच्च वर्ग की अवसर वादिता (लाभ)
3. राजनैतिक स्वार्थ एवं आकांक्षाएं।

साम्प्रदायिकता के क्रूर पंजो के निशान समाज में विभक्त वर्गो में भी दिखते है। सभी वर्गो का अंतर्विरोध वर्ग की बेसाखी पर टिका है। साम्प्रदायिकता के दैत्य ने सदैव निम्न वर्ग को ही निगला है, जिसकी सत्यता, नत्थू आदि के चरित्र मे मिलती है। अंत में मारा जाता है, और वास्तविक अपराधी मुरादअली अंत में हिन्दू, मुस्लिम एकता का नारा लगाता है।

गाँव के परिपेक्ष्य में हरनासिंह (सरदार) जिसकी ईश्वर के प्रति गहरी आस्था है। अभी तक जीवन में हर स्थिति का सामना दृढ़तापूर्वक कर सकने की क्षमता रखता है, दंगें में उसकी सारी संपत्ति विनष्ट हो जाती है , उसे भांगकर दूसरे के घर शरण लेना पड़ता है पर कहीं भी विचलित नही होता, परंतु शरण देंने वाली महिला के द्वारा लस्सी पीने के लिये देने पर फूट–फूट कर रोता है। ''जीवन मे आज पहली बार टूटता है, उसकी सारी आस्थाएं विखंडित हो जाती है क्योंकि इस साम्प्रदायिक लड़ाई जिसमे उसकी कोई भूमिका नही है, पहली बार उसे जीवन मे हाथ फैलाने के लिये मजबूर कर देती है।''[10]

साम्प्रदायिकता की नीति पर आधारित व्यवस्था–राजनैतिक एवं सामाजिक एवं धार्मिक पहलू, 'डिवाइड एंड रूल पालिसी', धार्मिक संगठनो की नीयत एवं कार्यप्रणाली के आधार पर– अंग्रेंजो की नीति का प्रतिनिधी रिचर्ड डिप्टी कमिश्नर समस्त मानवीय गुणो सें ओत प्रोत होने के बावजूद कुर्सी पर बैठता है जो मात्र ब्रिटिश साम्राज्य का प्रतिनिधि और उन नीतियो को क्रियांवित करता है जो लंदन में निर्णित होती है– रिचर्ड–यहां के लोग कुछ नही जानते। ये वही कुछ जानते है जो हम उन्हे बताते है और रिचर्ड कहता है'' धर्म के नाम पर आपस में लड़ते है, देश के नाम पर हमारे आगे साथ लड़तें है।

तमस मे अज्ञान एवं अंधविश्वास पर आधारित धर्म को आधार बनाकर चलाई गई राजनीति को गलत सिद्ध किया गया है, क्योंकि यह लोगो को विभाजित कर, कमजोर करके, साम्राज्यवादी व्यवस्था के लिये खुला मार्ग प्रशस्त कर रही है। हिन्दु–मुस्लिम साम्प्रदायिक राजनीति ने स्वाधीनता आंदोलन को कमजोर बना दिया था, यद्यपि अंग्रेज सरकार इस समस्या को सुलझा सकती थी, क्योंकि सारी शासन व्यवस्था उन्ही के पास थी, पर वे मौन साधे, इसकी प्रगति की कामना कर रहे थे।

लेखक का साम्प्रदायिक द्वेष को नकारने का व्यंगात्मक ढंग (उसके पीछे तर्क और वैचारिक परिप्रेक्ष्य के आधारों पर सांस्कृतिक ढांचे, सामाजिक असमानता, अशिक्षा एवं शोषण के मुख्य कारणों का रेखांकन)–

साम्प्रदायिक द्वेष को नकारने के लिये तात्कालीन परिस्थितियों में निहित विद्रूपताओं को लेखक व्यंगात्मक शैली से अध्येताओं के सम्मुख रखता है। लेखक ने बड़े कौशल के साथ व्यंग्य विद्रूप शैली में तत्कालीन परिस्थितियों को सुस्पष्ट कर दिया है जो जनता को अंधकार में रखकर उनकी अज्ञानता का लाभ उठाकर उनकी समस्त भावनाओं को गलत दिशा में मोड़ देते है। इसके लिये लेखक ने राजनीति की कमजोर समझ का तर्क देकर वैचारिक परिपेक्ष्य में समाज में स्थित सांस्कृतिक ढांचें, सामाजिक असमानता अशिक्षा एवं शोषण कें मुख्य कारणों का रेंखांकन बखूबी किया है।

समाज का सांस्कृतिक ढांचा धर्म की बुनियाद पर खड़ा है जिसमे आस्था एक है, पर अभिव्यक्ति अलग–अलग कोई धर्म के नाम पर सूअर को मारने पर, कोई गाय को मारने पर अपना आक्रोश ''मानव को मारकर करता है। सामाजिक यथार्थता को लेंखक ने ऊँच–नीच, छोटे–बड़े के भेद एवं अशिक्षा के माध्यम से व्यक्त किया है। निम्न वर्ग की विवेकशून्यता, अशिक्षा और राजनीतिक की कमजोर समझ का लाभ उनके भावनाओं को गलत दिशा में मोड़कर, भड़काकर उन्हें लड़ाई के लिये तैयार किया जाता है। उच्च वर्ग तो मात्र सभा सोसायटी, मीटिंग अमन शांति कमेटी, बनाने से ही फुर्सत नही पाता है।

सांम्प्रदायिक लड़ाई वास्तव में वर्ग संघर्ष न होकर शोषक, शोषितों कें रूप में सम्प्रदाय के आधार पर विभाजित होता है। गरीबी का एहसास ही तो शोषण है। सांस्कृतिक और सामाजिक ढ़ांचा जाति एवं गरीबी पर आधारित है। यह दिखाने के लिये लेखक कम्युनिस्टो की उस असफल चेष्टाओं की और भी संकेत करता है, जो दोनो सम्प्रदायो में सुलह कराने के लिये करते है। लेकिन उनके प्रयत्नो का कोई प्रभाव नही पड़ता बल्कि उनका मनोबल उनके सिद्धांत के साथ–साथ विश्वास भी टूट जाता है, जब मजदूरो को ही आपस में लड़तें देखतें हैं। देवव्रत को खबर लगती है कि ''मजदूरों की बस्ती में फसाद हो गया है और दो सिक्ख बढई मारे गये है तो उसका सिर झुक जाता है और उसे लगता है कि अगर मजदूर आपस में लड़ सकते है तो यह विष बहुत गहरा असर कर चुका है और एकता के उसके प्रयत्न ''पानी पर खिंची लकीर बन जाते है।''[11]

तमस के परिवेश एवं चरित्रो के संदर्भ में प्रमाणिकता एवं काल्पनिकता के भाववादी पहलू (विशेष रूप से उपन्यास के दूसरे खण्ड का अध्ययन) उपन्यास के द्वितीय खंड में लेंखक ने गाँवो की हालत बयान की है। फसाद की आग गाँव वालो में भी पहुंच चुकी थी मुसलमानो के गाँव खानपुर के एकमात्र सिक्ख परिवार पर पड़ी मुसीबतो के माध्यम से लेखक ने एक पूरी तस्वीर उभारने की कोशिश की है। हरनामसिंह को अपने गाँव से निकल जाना पड़ता है, बाहर से आये बलवाई उसके मकान को जलाकर उसका सारा सामान लूट कर ले जाते है, हरनामसिंह दूसरे गाँव में पहुंचकर एक मुसलमान के ही घर शरण के लिये मजबूर हो जाता है। अतः लेखक ने गाँव की सम्पूर्ण परिवेश को एक सूत्र में चित्रित करने के लिये ही हरनामसिंह के परिवार को चुना है। एक तरफ हरनामसिंह और पत्नि बंतो अपने गांव से निकाले जोर आसरा ढूंढते, जीवन और मृत्यू से संघर्ष करते घूमते ह। दूसरी तरफ उसकी बेटी जसवीर उस गांव में दिखाई गई है जहां सिक्ख और मुसलमान की बहुतायत है दोनो में घमासान युद्ध होता है, जसवीर अपने बच्चों, एवं अन्य स्त्रियो के साथ कुएं में कूदकर सामूहिक आत्म बलिदान करती है। तीसरी तरफ उनका बेटा इकबालसिंह जिसे बलवाइयों ने जबर्दस्ती पकड़कर मुसलमान बना दिया है। सर्वाधिक मार्मिक प्रसंग इकबालसिंह का है जिस तरह से उसे सिक्ख से मुसलमान बनाकर उसे अपनाया जाता है, सारी प्रक्रिया धर्म और सम्प्रदायो के तमाम ऊपरी विभेदो के लिये नफरत पैदा करती है। उपन्यास के अंत में फसाद के थम जाने पर शासकीय औपचारिकताओं की पूर्ति का चित्रण है।

यथार्थवादी, मानववादी दृष्टिकोण की स्थापनाओं के साथ तमस का मूल्यांकन

तमस उपन्यास में अग्रेंजो की ''डिवाइड एण्ड पालिसी'' जिसने दोनो सम्प्रदायों में धर्म के नाम पर वैमनस्य पैदा करके उन्हे लड़ाया जिसकी दुखद परिणति भारत एवं पाकिस्तान के रूप में आज हमारे सामने है। हमारे देश की सांस्कृतिक ढांचा प्रभावित हुआ और राजनीति को सामाजिक असामनता, शोषण और अन्याय से जोड़कर पूरे देश को विभिन्न साम्प्रदाओं में बांट दिया गया है। – ''भीष्म साहनी की अनेक रचनाओं मे धैर्य देखने मे आता है। विशेष रूप से मैं यहां तमस का जिक्र करना चाहूंगा। साम्प्रदायिकता जैसे नाजुक विषय पर सही दृष्टि से लिखने के लिए जिस अपरिसीमित, धैर्य की जरूरत है, उसका आभास इस रचना को पढ़कर ही हो सकता है। .....भीष्म जी इन रचनाओं मे एक अद्‌भूत शिल्पी के रूप उभर कर आए है। उन्होंनें इस रचना में अपार धैर्य एवं अनुशासन का परिचय दिया है और इस रचना की कोई चूल ढीली नही है। एक सही ऐतिहासिक दृष्टि व समझ से बनाया गया वह एक ऐसा ठोस भवन है, जो सरल, सुंदर, मजबूत व विशाल है और हमारे बीच प्रकाश स्तंभ की तरह जगमगा रहा है।''[12]

संदर्भ ग्रथ सूची

1. कृष्णा सोबती – सिक्का बदल गया (भूमिका), पृष्ठ–11
2. राजेश्वर दयाल सक्सेना – सृजनशील यथार्थ (लेख), पृष्ठ–86
3. भीष्म साहनी – तमस, पृष्ठ–75
4. भीष्म साहनी – तमस, पृष्ठ–158
5. भीष्म साहनी – तमस, पृष्ठ–162
6. भीष्म साहनी – तमस, पृष्ठ–92
7. भीष्म साहनी – तमस, पृष्ठ–162
8. भीष्म साहनी – तमस, पृष्ठ–106
9. भीष्म साहनी – तमस, पृष्ठ–195
10. भीष्म साहनी – तमस, पृष्ठ–203
11. भीष्म साहनी – तमस, पृष्ठ–205
12. अमरकांत – भीष्म साहनी : रचना और व्यक्तित्व, पृष्ठ–246